पाठ 7

दीदी की डायरी

8RHLXJ

– संकलित

डायरी का सामान्य सा अर्थ अपने दैनिक क्रियाकलापों को डायरी में अंकित करना है। डायरी के पढ़ने से उक्त व्यक्ति की सोच–समझ, रुचियों, मनोवृत्तियों उसके परिवेश और सन्दर्भ का पता चल पाता है। साहित्यकारों और इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तित्व की डायरियाँ अपने उल्लेखनीय विषयवस्तु के कारण इतिहास की महत्वपूर्ण स्रोत और जानकारी के आधार बने हैं। प्रस्तुत पाठ में डायरी, साहित्य की अन्य विधाओं की तरह एक विधा है। डायरी के विषयवस्तु पाठक के लिए कैसे महत्व रखते हैं? इसकी समझ को रखना इस पर चर्चा करना और विद्यार्थियों में डायरी लेखन के प्रति चाहत पैदा करना जैसे विविध उद्देश्य अपेक्षित हैं।

गुलाब के फूल–सी नन्हीं संजू। है तो अभी छोटी, पर है बड़ी सयानी। कक्षा आठ में पढ़ती है। स्वभाव से हँसमुख है। खूब हँसती–हँसाती है। चुटकुले सुनाए तो हँसी के फव्वारे छूटने लग जाते हैं।

संजू को किताबें पढ़ने का शौक है–कहानी, कविता, कॉमिक्स आदि। यह शौक उसे माँ की देखा–देखी लगा है। संजू चाहे कक्षा में अच्छे नंबर लाए या जन्मदिन मनाए, उसे उपहार मिलता है पुस्तक का। फलतः उसके घर में छोटा–सा पुस्तकालय बन गया है। स्कूल में भी उसे चटपटी पुस्तक की तलाश रहती है।

अभी पिछले दिनों संजू ने गांधी साहित्य पढ़ा। बापू के '**सत्य के प्रयोग**' पुस्तक उसे बहुत पसंद आई। बापू ने इन प्रयोगों को अपनी डायरी में लिखा था। संजू ने सोचा, वह भी डायरी लिखेगी। माँ ने भी उसका हौसला बढ़ाया। पिता जी को पता चला तो बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे एक सुंदर डायरी ला दी।

अब संजू मुश्किल में पड़ गई। वह कैसे शुरू करे ? तभी उसे याद आया, उसकी दीदी भी तो डायरी लिखती हैं। उसने दीदी को अपनी इच्छा बताई। दीदी ने हौसला बढ़ाते हुए कहा–

''यह तो कोई कठिन बात नहीं। बस, रात को मन लगाकर बैठ जाओ। दिनभर की सारी घटनाएँ याद करो और वैसी–की–वैसी लिख दो। इसे प्रतिदिन लिखते रहना जरूरी है।'' संजू ने हठ करते हुए कहा–''दीदी, आपकी डायरी दिखा दो ना। थोड़ा–सा पढ़कर लौटा दूँगी।'' दीदी पहले तो हिचकिचाई, फिर बात मान ली। संजू ने दीदी की डायरी के जो पृष्ठ पढ़े, वे नीचे दिए जा रहे हैं।

1 जनवरी, 08

कॉलेज में कक्षा के सामने ठक्–ठक् होती रही। कारीगर पत्थर तराश रहे थे। एक छोटी–सी छेनी से वे पत्थर में फूल–पत्तियाँ उकेर रहे थे।

2 जनवरी, 08

आज सुबह शीला के घर गई । वह स्नानघर में थी। अकेली बैठी–बैठी क्या करती ? पत्रिका का पुराना रंगीन पृष्ठ नजर आया। उसी को उलटने–पलटने लगी। इसमें एक चुटकुला बहुत मजेदार था। हँसते–हँसते लोट–पोट हो गई। अभी डायरी लिखते समय भी हँसी नहीं रुक रही है। फिर से पढ़ पाऊँ इसलिए लिख लेती हूँ इसे–

खरीददार–(मालिक से) इस भैंस की तो एक आँख खराब है, फिर इस भैंस के सात हजार क्यों माँग रहे हो?

मालिक–भैंस से दूध लेना है या कशीदाकारी करवानी है।

माँ को कल रात से मलेरिया है। मैं तो रातभर उनके पास बैठी रही। खाना भैया ने बनाया। आलू मटर की सब्जी बनाई। गरम–गरम रोटियाँ सेंक लीं। मैंने ज्यों ही पहला कौर मुँह में डाला तो फीका लगा। नमक तो था ही नहीं। माँ ने पूछा, ''सब्जी कैसी बनी?'' मैंने कहा, ''बहुत स्वादिष्ट है।'' इधर भैया का बुरा हाल। आँखें नीची। पर इससे क्या ? नमक नहीं था तो कोई बात नहीं, बाद में डाल लिया। सोच रही थी–अगर भैया दो बार नमक डाल देते तो?

3 जनवरी, 08

पिकनिक का दिन रहा आज का। जहाँ हम गए, वह स्थान बहुत सुंदर था। हरे–हरे वृक्षों से घिरा हुआ, पानी से लबालब भरा एक सरोवर। शांत वातावरण। पक्षियों की चहचहाहट। वहाँ पहुँचकर हम छोटी–छोटी टोलियों में बँट गए। मैं तो साईदा, नीलू, विमला और संजू के साथ रही।

पहले तो वहाँ हम चारों ओर घूमते रहे। झूलों पर झूले। फिर सरोवर पर गए तो मछलियाँ देखते रहे। डूबती–उतराती, रंग–बिरंगी तथा छोटी मछलियाँ। तभी बहन जी ने बुलावा भेजा।

अब सब मैदान में आ इकट्ठे हुए। नरम–नरम घास पर बैठ गए। गुनगुनी धूप थी। बारी–बारी से हमने गाना गाया। ढोलक बजी तो नाच–गाने में रम गए सब। मंजू, जो कक्षा में चुपचाप बैठी रहती थी, आज खूब नाची। मैंने भी जादू के खेल दिखाए। खेल में जिसने जो फल चाहा, उसे उसी फल की खुशबू सुँघा दी। जो मिठाई माँगी वही चखा दी। कितना आनंद आया, लिख न सकूँगी। मेरे जादू के करिश्मे को देख अंजू तो मचल ही गई। बोली–''एक–दो जादू तो मुझे भी सिखा दो, दीदी। मैं भी विज्ञान के ऐसे दूसरे खेल सीखूँगी।'' मन करता है पिकनिक के दिन बार–बार आएँ।

संजू ने डायरी के दो–तीन पन्ने उलट दिए।

8 जनवरी, 08

आज रविवार था। कहीं आने–जाने की इच्छा तो थी नहीं। माँ ने चाट बनाई थी। जमकर नाश्ता किया। चाय की चुस्कियाँ लीं और फिर सुबह–सुबह ही पढ़ने बैठ गई। सोचा वह पुस्तक ही पढ़ डालूँ जो कल पुस्तकालय से लाई थी। नाम तो बड़ा अजीब था– तोतो चान। एक जापानी लड़की की कहानी है। बड़ी मजेदार। जिस स्कूल में वह पढ़ती थी वह रेल के छह डिब्बों में चलता था। जो जहाँ चाहे बैठे। जो चाहे पढ़े। शिक्षक का कोई डर नहीं। पूरी आजादी। तोतो चान एक मनमौजी लड़की थी जिसे अपनी शरारत के कारण कई स्कूल बदलने पड़े। वह यहाँ रेल के डिब्बेवाले स्कूल में जम गई। उसका जीवन बदल गया। मुझे यह पुस्तक बहुत अच्छी लगी। सोचती हूँ– क्या हमें भी पढ़ने की ऐसी आजादी मिल सकती है।

9 जनवरी, 08

आज का पूरा दिन उदासी में बीता। माँ ने मुझे बार–बार टोका। उदासी का कारण जानना चाहा। पर मैं कुछ बोल न पाई। क्या बताऊँ, वह मेरी सहेली नीलू है न, कल से पढ़ने नहीं जाएगी। एक महीने बाद यह गाँव ही छूट जाएगा, उससे। उम्र तो मेरी जितनी ही है, पर घरवाले उसके हाथ पीले करके ही दम लेंगे। मुझे मिली तो गले लगकर रोने लगी। कहती थी–''बहिन, पढ़ने का बेहद मन है। पर, क्या करूँ, कोई मेरी बात सुनता ही नहीं।''

नीलू कक्षा में अव्वल आती थी। खेलने–कूदने में भी किसी से कम न थी। एक ही प्रश्न रह–रहकर मेरे मन में उठ रहा है। क्या लड़कियों को पढ़ने का पूरा–पूरा अवसर नहीं मिलना चाहिए? दुनिया भर की लड़कियाँ आज क्या–क्या करतब दिखा रही हैं। हम हैं कि चौके–चूल्हे के चक्कर से किसी तरह उबर नहीं पातीं। मुझे तो नीलू पर भी गुस्सा आता है। आखिर कब तक अपनी इच्छाओं का गला दबाती रहेगी? मैं तो यह स्थिति कदापि.....!

10 जनवरी, 08

स्कूल जाने के लिए समय पर घर से निकली। तपाक से छींक हुई। रिक्शेवाले ने छींका था। दादी माँ ने आवाज लगाई–''बिटिया, आज स्कूल न जाओ। सामने की छींक है।'' मेरा मन भी मैला हो गया था। एक पल सोचा, रिक्शा लौटा दूँ। तभी याद आया, आज तो हमारी कक्षा को अभिनय करना था जिसकी मैं प्रमुख पात्र थी, उससे तो मेरा अत्यंत लगाव है। ''जो होगा सो हो जाएगा'' हिम्मत करके चल ही दी। अभिनय में मैंने भी भाग लिया।

हमारा अभिनय सभी ने सराहा। खूब तालियाँ बजाईं। मैं तो व्यर्थ ही छींक से डर गई। उल्टे, मुझे पुरस्कार मिला; शाबाशी अलग। आगे से मैं शकुन–अपशकुनों के फेर में पड़नेवाली नहीं।

11 जनवरी, 08

आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। न पढ़ाई में मजा आया, न खेल में। कोई डाँट–डपट भी नहीं हुई। कभी–कभी सोचती हूँ, सब लोग लड़कियों को ही क्यों डाँटते हैं?

दीदी की डायरी से संजू को आधार मिल गया। उसने भी कल से डायरी लिखने का संकल्प ले लिया।

शब्दार्थ :– **कॉमिक्स** – कार्टून वाली कहानी की किताब, **हौसला** – किसी काम को करने की आनंदपूर्ण इच्छा, उत्कंठा, लालसा, **हिचकिचाहट**– आगा–पीछा सोचना, संकोच, **तराशना**– काट–छाँट, बनावट, रचना प्रकार, **कशीदाकारी**– कढ़ाई करने की क्रिया, **अत्यंत**–बहुत अधिक, बेहद, अतिशय, हद से ज्यादा, **अव्वल**–उत्तम, श्रेष्ठ।

अभ्यास

पाठ से

1. दीदी की डायरी संजू ने क्यों पढ़ी ?
2. संजू की दीदी किस चुटकुले को पढ़कर लोट–पोट हो गई थीं ?
3. संजू की दीदी ने पिकनिक में क्या–क्या करतब दिखाए ?
4. संजू की दीदी के मन में लड़कियों की शिक्षा के विषय में क्या विचार आए ?
5. संजू ने साहित्य की कौन सी पुस्तक पढ़ी और वह पुस्तक उसे क्यों पसंद आई?
6. रिक्शावाले की छींक का संजू पर क्या असर हुआ ?
7. नन्ही संजू को अपनी सहेली पर गुस्सा क्यों आया ?
8. संजू को तोतोचान के व्यक्तित्व के कौन–कौन से पहलू मजेदार लगे और वह मन में क्या सोचती है?
9. संजू के पूरे दिन उदासी में बीतने के क्या कारण थे?

पाठ से आगे

1. आपके माँ–पापा और शिक्षक आपको बहुत से कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिसके कारण आपके जीवन में परिवर्तन होता है। उन अनुभवों को कक्षा में परस्पर चर्चा कर लिखिए ?
2. हमारे समाज में लड़कियों को पढ़ने और उच्च कक्षाओं तक शिक्षा को जारी रखते हुए आगे बढ़ने का कितना अवसर मिल पता है। समूह में चर्चा कर उत्तर लिखिए।

8S6HZ7

3. क्या हमें शकुन–अपशकुन जैसी मान्यताओं पर विश्वास करना चाहिए? इन मान्यताओं को स्वीकार करने के कारणों पर साथियों व अभिभावकों से चर्चा कर अपनी समझ को लिखिए।
4. आप अपने विद्यालय और तोतोचान के विद्यालय में क्या फर्क महसूस करते हैं? अपने अनुभव को संक्षेप में लिखिए।

5. डायरी के बारे में आपने सुना होगा, इसमें हम क्या–क्या लिखते हैं साथियों से बातचीत कर लिखिए साथ ही इसमें लिखी गई सामग्री क्या लेखन के अन्य तरीकों से भिन्न होती है? इस पर शिक्षक के सहयोग से चर्चा कर अपनी समझ को नोट कर कक्षा में सुनाइए।
6. लड़कियों को पढ़ने की आज़ादी न होने पर क्या हानि होगी ?
7. डायरी लिखने के क्या लाभ हो सकते हैं ?

भाषा से

1. पाठ में हँसाना, बढ़ाना, खेलाना, सेकवाना आदि क्रिया पद प्रयुक्त हुए हैं। जिन्हें हम प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं अर्थात वह क्रिया जिससे यह सूचित होता है कि कार्य किसी की प्रेरणा से या किसी दूसरे के द्वारा कराई जा रही है – जैसे गिर (ना) गिराना गिरवाना, चल (ना) चलाना चलवाना, चढ़(ना) चढ़ाना चढ़वाना आदि

   - अधिकतर धातुओं से दो–दो प्रेरणार्थक क्रिया बनती हैं, पहली प्रेरणार्थक में 'आ' और दूसरी में 'वा' जुड़ता है। आप खेलना, बोलना, खाना, रोना देना जैसे क्रिया पदों से प्रेरणार्थक क्रिया बनाइए।

2. प्रतिदिन, दिनोदिन, यथासंभव, यथासमय जैसे शब्द का प्रयोग पाठ में हुआ है, जो सामासिक पद हैं। समास के भेद की दृष्टि से ये उदाहरण अव्ययी भाव समास के हैं। इस समास में पहला पद (पूर्व पद) प्रधान होता है और पूरा पद अव्यय होता है। इस समस्त पद का रूप किसी भी लिंग, वचन आदि के कारण नहीं बदलता है। अव्ययीभाव समास में समस्त पद 'अव्यय' बन जाता है, उसका रूप कभी नहीं बदलता है। इसके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगता।

   पाठ में प्रयुक्त अव्ययी भाव समास के पाँच उदाहरण दीजिए।

3. पाठ में डूबती–उतराती, नाच–गाना, जाने–अनजाने, खेलने–कूदने, चौके–चूल्हे आदि इस तरह के योजक चिह्नों से जुड़े युग्म शब्द आए हैं, जो द्वन्द्व समास के उदाहरण हैं। विग्रह करने पर इनका अर्थ क्रम से डूबना और उतराना, नाचना और गाना है। इन शब्द युग्मों में दोनों ही पद प्रधान होते है, कोई भी गौण नहीं होता। इन्हें द्वन्द्व समास कहते हैं। पुस्तक से इस समास के दस उदाहरणों को ढूँढ़कर लिखिए और उनका समास विग्रह कीजिए।

4. इस पाठ में एक वाक्य आया है– कॉलेज में कक्षा के सामने ठक्–ठक् होती रही। ठक्–ठक् ध्वन्यात्मक शब्द है। किसी वस्तु पर जब हम दूसरी वस्तु से प्रहार करते हैं तो 'ठक्' जैसी आवाज़ होती है। इसी तरह की आवाज करने वाले शब्दों को 'ध्वन्यात्मक शब्द' कहते हैं।

   आप भी चार अन्य ध्वन्यात्मक शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

5. रामदयाल ने एक वाक्य लिखा – ''मैं प्रतिरोज़ श्रुतिलेख लिखता हूँ।" इस वाक्य में क्या अशुद्धि है?'' उसका कारण लिखिए और वाक्य शुद्ध करके लिखिए।

6. **नीचे लिखे वाक्यों को पढ़िए–**

   क. मैं तो **रातभर** उनके पास बैठी रही।

   ख. मुझे आपसे **इतना–भर** कहना है।

7. इन दोनों वाक्यों में **'भर'** शब्द का प्रयोग हुआ है। यह निपात सूचक शब्द है। पूर्व के पाठ में आपने इस विषय में पढ़ा है। दिए गए दोनों वाक्यों में इसका अर्थ अलग–अलग है। इनके अर्थों पर विचार कीजिए और लिखिए।

योग्यता विस्तार

1. आप अपने साथियों के साथ पिकनिक पर गए होंगे। पिकनिक पर जाने की योजना बनाने से लेकर पिकनिक से प्राप्त आनन्द, खुशी साथियों के सहयोग और समन्वय आदि से प्राप्त अनुभव को डायरी में लिखने का प्रयास कीजिए।
2. अपने विद्यालय में कक्षा नवीं के साथियों से हिंदी की पाठ्यपुस्तक मांगकर "अपूर्व अनुभव" शीर्षक संस्मरण को पढ़कर आपस में चर्चा कीजिए कि पढ़ने में आपको क्या मजेदार लगा।
3. बापू ने 'सत्य के प्रयोग' नामक पुस्तक के कुछ अंश डायरी के रूप में लिखे हैं। इस पुस्तक को खोजकर पढ़िए।

8SPA3H

4. कक्षा में एक–एक दिन का क्रियाकलाप हर विद्यार्थी सुनाए।
5. साहित्यकारों और राजनेताओं ने खूब सारी डायरियाँ लिखी हैं, उन सभी के नामों की सूची अपने शिक्षकों और साथियों के सहयोग से बनाइए।